

डीआरडीओ समाचार



डीआरडीओ की मासिक गृह पत्रिका

<https://www.drdo.gov.in/samachar>

ISSN: 0971-4405

मई 2024 खण्ड 36 अंक 05

इडुक्की में ध्वनिक निरूपण और मूल्यांकन के लिए सबमर्सिबल प्लेटफॉर्म का उद्घाटन



डीआरडीओ समाचार के ई-संस्करण तक पहुंचने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें



संरक्षक: डॉ के नागेश्वर राव
मुख्य संपादक: सुधांशु भूषण
संपादक: दीप्ति अरोरा
सहायक संपादक: धर्म वीर
अनुवादक: अनुराग कश्यप

प्रकाशन का 36वां वर्ष

मई 2024 खण्ड 36 अंक 05

हमारे संवाददाता

अहमदनगर	:	श्री आर ए शेख, वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (वीआरडीई)
अंबरनाथ	:	डॉ गणेश एस धोले, नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल)
चांदीपुर	:	श्री पी एन पांडा, एकीकृत परीक्षण परिसर (आईटीआर)
बेंगलूरु	:	श्री रत्नाकर एस महापात्रा, प्रूफ एवं प्रयोगात्मक संगठन (पीएक्सई) श्री सतपाल सिंह तोमर, वैमानिकी विकास स्थापना (एडीई) श्रीमती एम आर भुवनेश्वरी, वायुवाहित प्रणाली केंद्र (कैब्स) श्रीमती फहीमा ए जी जे, कृत्रिम ज्ञान एवं रोबोटिकी केंद्र (केयर) डॉ जोसेफिन निर्मला एम, युद्धक विमान प्रणाली विकास एवं एकीकरण केंद्र (कैसडिक) डॉ संचिता सिल तथा डॉ सुधीर एस काम्बले, रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल) डॉ वी सेंथिल, गैस टरबाइन अनुसंधान स्थापना (जीटीआरडीई) श्री वेंकटेश प्रभु, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई) सुश्री मीता जन, सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी)
चंडीगढ़	:	डॉ पाल दिनेश कुमार, चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल) डॉ अनुजा कुमारी, रक्षा भू-सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरडी)
चेन्नई	:	श्री के अंबाझगन, युद्धक वाहन अनुसंधान एवं विकास स्थापना (सीवीआरडीई)
देहरादून	:	श्री अभय मिश्रा, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुप्रयोग प्रयोगशाला (डील) श्री जे पी सिंह, यंत्र अनुसंधान एवं विकास स्थापना (आईआरडीई)
दिल्ली	:	श्री हेमंत कुमार, विस्फोटक तथा पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (सीफोस) डॉ दीप्ति प्रसाद, रक्षा शरीरक्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास) श्री संतोष कुमार चौधरी, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर) श्रीमति अरुण कमल, डीपीए आर ओ एंड एम, डीआरडीओ मुख्यालय श्री नवीन सोनी, नाभिकीय औषधि एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास) डॉ सुजाता दास, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा) श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह (एसएजी) डॉ रुपेश कुमार चौबे, टोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल)
ग्वालियर	:	डॉ ए के गोयल, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई)
हल्द्वानी	:	डॉ अतुल ग्रोवर, रक्षा जैव-ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (डिबेर)
हैदराबाद	:	श्री हेमंत कुमार, उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल) श्री श्रीनिवास जुलुरु, रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल) श्री ए आर सी मूर्ति, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल) डॉ मनोज कुमार जैन, रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)
जगदलपुर	:	श्री खिलावन सिंह, एसएफ परिसर (एसएफसी)
जोधपुर	:	श्री डी के त्रिपाठी, रक्षा प्रयोगशाला (डीएल)
कानपुर	:	डॉ मोहीत कटियार, रक्षा सामग्री एवं भंडार अनुसंधान और विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई)
कोच्चि	:	श्रीमती लता एम एम, नौसेना भौतिक तथा समुद्रविज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल)
लेह	:	डॉ डॉर्जी आंगचॉक, रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (दिहार)
मसूरी	:	गुप कैप्टन आर के मंशारमानी, प्रौद्योगिकी प्रबंध संस्थान (आईटीएम)
मैसूर	:	डॉ एम पालमुरुगन, रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएफआरएल)
नासिक	:	श्री आशुतोष शर्मा, ऊर्जस्वी पदार्थ उन्नत केंद्र (एसीईएम)
पुणे	:	श्री अजय के पांडे, आयुध अनुसंधान और विकास स्थापना (एआरडीई) डॉ विजय पट्टर, रक्षा उन्नत प्रौद्योगिकी संस्थान (डीआईएटी) डॉ गणेश शंकर डोम्बे, उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल)
तेजपुर	:	डॉ के एस नखुरु, रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल)
विशाखापत्तनम	:	श्रीमती ज्योत्सना रानी, नौसेना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल)



इस अंक में

मुख्य लेख	4
नवोन्मेष	6
घटनाक्रम	10



मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप	16
कार्मिक समाचार	25
निरीक्षण/दौरा कार्यक्रम	25

वर्तमान अंक, DRDO Newsletter, Vol 44, Issue 5, May 2024, का हिंदी अनुवाद है।

अपने सुझावों से हमें अवगत कराने के लिए कृपया संपर्क करें:
director.desidoc@gov.in; drdonl.desidoc@gov.in
दूरभाष: 011-23902403, 23902472, फ़ैक्स: 011-23819151

इडुक्की में ध्वनिक निरूपण वर्णन और मूल्यांकन के लिए सबमर्सिबल प्लेटफॉर्म का उद्घाटन

डीआरडीओ की कोच्चि स्थित प्रयोगशाला, नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), द्वारा कुलामावु, इडुक्की, में स्थित अंतर्जलीय ध्वनिक अनुसंधान सुविधा (यूएआरएफ), में स्थापित की जाने वाली अत्याधुनिक अवसंरचना सुविधा 'ध्वनिक लक्षण वर्णन और मूल्यांकन के लिए सबमर्सिबल प्लेटफॉर्म (SPACE)' का उद्घाटन नौसेना प्रौद्योगिकी की उन्नति में एक मील का पत्थर साबित होगा। इसे पोत, पनडुब्बियों और हेलीकॉप्टर सहित विभिन्न प्लेटफॉर्मों, पर भारतीय नौसेना के लिए सोनार प्रणालियों के परीक्षण और मूल्यांकन के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में अभिकल्पित किया गया है।

डॉ समीर वी कामत, सचिव, डी डी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, ने 17 अप्रैल 2024, कुलामावु, इडुक्की,

स्थित यूएआरएफ में इस विश्वस्तरीय सुविधा का उद्घाटन किया, जिसने एंटी-सबमरीन वारफेयर अनुसंधान क्षमताओं के एक नए युग की शुरुआत की। अपने उद्घाटन संबोधन के दौरान, डॉ कामत ने अनुरोध किया कि एनपीओएल को अन्य डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के लिए इस सुविधा की क्षमताओं को उजागर करना चाहिए और अंततः इस सुविधा को भारतीय उद्योगों और डीआरडीओ पारिस्थितिकी तंत्र से बाहर अन्य प्रयोगशालाओं के लिए खोलना चाहिए।

डॉ वाई श्रीनिवास राव, महानिदेशक (NS&M), ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में बड़ी स्वदेशी इंजीनियरिंग सुविधाओं का निर्माण करने की हमारे भारत की क्षमताओं पर प्रकाश डाला और समुद्री परीक्षणों की संख्या को कम करने

के लिए एआई-आधारित पूर्वानुमान एल्गोरिदम, सिमुलेशन इत्यादि जैसी अतिरिक्त सुविधाएं रखने का सुझाव दिया।

डॉ के अजित कुमार, निदेशक, एनपीओएल, ने बताया कि इस सुविधा में दो अलग-अलग संरचनाएँ हैं: एक तैरता हुआ मंच जो पानी की सतह पर तैरता रहता है, और दूसरा एक जलमग्न मंच जिसे घिरणी प्रणाली का उपयोग करके 100 मीटर गहराई तक ले जाया जा सकता है। कार्य पूरा होने के बाद, जलमग्न मंच को वापस ऊपर खींच लिया जाता है और उसे तैरते हुए मंच से जोड़ दिया जाता है।

यह सुविधा मुख्य रूप से संपूर्ण सोनार प्रणाली के मूल्यांकन के लिए उपयोग की जाएगी, जिससे वैज्ञानिक पैकेजों जैसे सेंसर और ट्रांसड्यूसर की



त्वरित तैनाती और आसान पुनर्प्राप्ति हो पाती है। यह सुविधा आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग करके वायु, सतह, मध्य-जल, और जलाशय तल मापदंडों के सर्वेक्षण, प्रतिचयन, और डेटा संग्रहण के लिए उपयुक्त होगी। यह आधुनिक, सुसज्जित वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में डेटा संसाधन और प्रतिदर्श विश्लेषण की आवश्यकताओं को पूरा करेगी।

निर्माण के दौरान, यथासंभव 'हरित अवधारणा' को शामिल किया गया है, जिसमें जैव शौचालय और सौर ऊर्जा उत्पादन के प्रावधान शामिल हैं। प्लेटफॉर्म का अभिकल्पन और निर्माण भारतीय शिपिंग पंजीकरण, जहाज वर्गीकरण प्राधिकरण की सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है, तथा साथ ही पत्तन निदेशक, केरल सरकार के निरीक्षण और पंजीकरण मानदंडों का भी सख्ती से पालन करता है। सुविधा का निर्माण मैसर्स एल एंड टी शिप बिल्डिंग, चेन्नई, द्वारा किया गया और यह सुविधा एनपीओएल द्वारा प्रस्तावित डिजाइन अवधारणाओं और आवश्यकताओं पर आधारित है। निदेशक, एनपीओएल, ने परियोजना निदेशक और टीम के सदस्यों को बधाई दी, और इस तरह की प्रणाली को डिजाइन करने में एल एंड टी शिप बिल्डिंग द्वारा किए गए प्रयासों की भी सराहना की।

श्रीरजीलआनंद, परियोजना प्रबंधक, SPACE, एल एंड टी शिप बिल्डिंग, ने SPACE परियोजना की जानकारी साझा की। श्री पंकज चड्ढा, प्रमुख (मरीन प्लेटफॉर्मस, उपकरण और प्रणाली), एल एंड टी, प्रिसिजन इंजीनियरिंग एंड सिस्टम्स; तथा पूर्व परियोजना निदेशक, श्री समीर अब्दुल अजीज ने सबको बधाई दी। सुविधा की विभिन्न विशेषताओं को दर्शाने वाली, SPACE पर एक लघु फिल्म भी चलाई गई।

इस अवसर पर, डीआरडीओ अध्यक्ष ने श्रीमती लीना एनपी, कार्यकारी अभियंता, बाँध सुरक्षा प्रभाग, केएसईबी,



को हाइड्रोग्राफिक सॉफ्टवेयर सौंपा। कार्यक्रम के दौरान डॉ कामत और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा डीआरडीओ 'प्रौद्योगिकी विशेष' के एनपीओएल विशेषांक; कम्पेंडियम ऑन एनपीओएल आर एंड डी एक्टिविटीज ऑन एएसडब्लू सर्वेलांस (2022-24); और एनपीओएल की हिंदी पत्रिका 'लहर' के एक विशेष तकनीकी संस्करण का उद्घाटन भी किया गया।

समापन वक्तव्य के दौरान, श्री शान विक्टर परेरा, परियोजना निदेशक (SPACE), ने एल एंड टी, केरल बांध सुरक्षा प्राधिकरण, वन और वन्यजीव विभाग, जिला प्रशासन, केरल राज्य विद्युत बोर्ड (KSEB), केरल पुलिस विभाग, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड,

स्थानीय निकाय प्रतिनिधियों, कुलामावु के लोगों, यूएआरएफ टीम आदि, सभी हितधारकों के समर्थन की सराहना की, जिनके द्वारा समय पर किए गए प्रयासों ने दुनिया में इस तरह की एक अनूठी सुविधा के निर्माण को संभव बनाया।

रियर एडमिरल (सेवानिवृत्त) जी के हरीश, प्रमुख एलएंडटी शिप बिल्डिंग; श्री निनान, ऊरुमूपन, कुलामावु; श्री विष्णु प्रतीप आईपीएस, इडुक्की जिले के पुलिस प्रमुख; श्री एन राजेश आईएफएस, डीएफओ, कोट्टायम; श्री मनोज आईएएस, डिप्टी कलेक्टर; श्री एबी वर्गीस, पर्यावरण इंजीनियर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और एनपीओएल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस कार्यक्रम के साक्षी रहे।



स्वदेशी प्रौद्योगिकी क्रूज मिसाइल का सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण

डीआरडीओ ने 18 अप्रैल 2024 को ओडिशा के तट पर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर), चांदीपुर, से स्वदेशी प्रौद्योगिकी क्रूज मिसाइल (आईटीसीएम) का सफलतापूर्वक उड़ान परीक्षण किया। मिसाइल के प्रदर्शन की निगरानी कई रेंज सेंसरों द्वारा की गई, जैसे रडार, इलेक्ट्रो-ऑप्टिकल ट्रैकिंग सिस्टम (EOTS) और टेलीमेट्री, जिन्हें आईटीआर द्वारा विभिन्न स्थानों पर तैनात किया गया था ताकि उड़ान पथ का पूरा कवरेज सुनिश्चित हो सके। भारतीय वायु सेना के विमान सूखोई-30 मार्क-1 ने भी मिसाइल की उड़ान की निगरानी की।

निर्धारित पथ पर चलने के लिए मिसाइल ने वे-पॉइंट नेविगेशन का उपयोग किया और बहुत कम ऊंचाई वाली समुद्री-स्कimming उड़ान



का प्रदर्शन किया। इस सफल उड़ान परीक्षण ने गैस टरबाइन अनुसंधान

स्थापना (जीटीआरई), बंगलुरु, द्वारा विकसित स्वदेशी प्रणोदन प्रणाली के विश्वसनीय प्रदर्शन को भी स्थापित किया। बेहतर और अधिक विश्वसनीय प्रदर्शन सुनिश्चित करने के लिए मिसाइल उन्नत एवियोनिक्स और सॉफ्टवेयर से भी सुसज्जित है।

मिसाइल को वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान (एडीई), बंगलुरु, द्वारा अन्य प्रयोगशालाओं और भारतीय उद्योगों के योगदान के साथ विकसित किया गया है।

माननीय रक्षा मंत्री ने डीआरडीओ को आईटीसीएम के सफल उड़ान-परीक्षण के लिए बधाई दी और कहा कि स्वदेशी प्रणोदन द्वारा संचालित स्वदेशी लंबी दूरी की सबसोनिक क्रूज मिसाइलों का सफल विकास भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

नई पीढ़ी की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-प्राइम का सफल उड़ान-परीक्षण

स्ट्रैटेजिक फोर्सज कमांड (SFC), ने 03 अप्रैल 2024 को ओडिशा के तट पर डॉ एपीजे अब्दुल कलाम द्वीप से नई पीढ़ी की बैलिस्टिक मिसाइल अग्नि-प्राइम का सफल उड़ान परीक्षण किया।

परीक्षण ने सभी निर्धारित लक्ष्यों को पूरा किया, जिससे मिसाइल की विश्वसनीय कार्यक्षमता साबित हो गई। विभिन्न स्थानों पर तैनात रेंज सेंसरों द्वारा लिए गए आंकड़ों ने इसकी पुष्टि की, जिसमें टर्मिनल बिंदु पर तैनात दो डाउनरेंज शिप भी शामिल हैं। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, स्ट्रैटेजिक फोर्सज कमांड के प्रमुख, डीआरडीओ



छाया चित्र

एवं भारतीय सेना के वरिष्ठ अधिकारी प्रक्षेपण के गवाह बने।

माननीय रक्षा मंत्री ने सफल उड़ान-परीक्षण के लिए डीआरडीओ, एसएफसी, और सशस्त्र बलों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मिसाइल का सफल विकास और शामिल होना सशस्त्र बलों के लिए बड़ा शक्ति गुणक होगा।

चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, जनरल अनिल चौहान, तथा डॉ समीर वी कामत, सचिव, डी डी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ ने सफल उड़ान परीक्षण के लिए एसएफसी और डीआरडीओ के प्रयासों की सराहना की।

स्वदेशी MPATGM हथियार प्रणाली का सफल परीक्षण

डीआरडीओ द्वारा स्वदेशी रूप से अभिकल्पित और विकसित मैन-पोर्टेबल एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल (MPATGM) हथियार प्रणाली का, प्रौद्योगिकी की श्रेष्ठता साबित करने के उद्देश्य से कई बार विभिन्न उड़ान विन्यासों में मूल्यांकन किया गया। इस प्रणाली में एमपीएटीजीएम, लॉन्चर, लक्ष्य अधिग्रहण प्रणाली और फायर कंट्रोल यूनिट शामिल हैं।

जनरल स्टाफ क्वालिटेटिव रिव्वायरमेंट्स (इन्फैंट्री, भारतीय सेना) में निर्धारित पूर्ण परिचालन लिफाफे के अनुपालन को प्राप्त करने की दिशा में पर्याप्त संख्या में मिसाइल फायरिंग परीक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। 13 अप्रैल 2024 को राजस्थान के पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज में वारहेड उड़ान परीक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किए गए। मिसाइल और वारहेड का प्रदर्शन उल्लेखनीय पाया गया।

एमपीएटीजीएम के टेंडेड वारहेड प्रणाली का अंतर्वेशन परीक्षण



सफलतापूर्वक पूरा हुआ, और यह आधुनिक कवच-संरक्षित मुख्य युद्ध टैंकों (MBT) को नष्ट करने में सक्षम पाया गया।

एटीजीएम प्रणाली दिन/रात एवं शीर्ष-अटैक क्षमता से सुसज्जित है। टैंक युद्ध में मिसाइल क्षमता के लिए दोहरे मोड का लक्ष्य साधक एक अच्छा संयोजक है। इस तकनीकी विकास और सफल परीक्षणों के साथ ही यह प्रणाली अंतिम उपयोगकर्ता मूल्यांकन परीक्षणों के लिए तैयार है, जिसके बाद

इसे भारतीय सेना में शामिल कर लिया जाएगा।

माननीय रक्षा मंत्री ने प्रणाली के सफल परीक्षण के लिए डीआरडीओ और भारतीय सेना की सराहना की और इसे उन्नत प्रौद्योगिकी-आधारित रक्षा प्रणाली विकास में आत्मनिर्भरता हासिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

सचिव, डी डी आर एंड डी एवं अध्यक्ष डीआरडीओ, ने भी परीक्षणों से जुड़ी टीमों को बधाई दी।

तट रक्षक अनुकूलन परीक्षण सौंपे गए

04 अप्रैल 2024 को रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर) में आयोजित एक कार्यक्रम में डॉ अरुणिमा गुप्ता, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, ने डीआईजी के एल अरुण, प्रधान निदेशक (भर्ती), भारतीय तटरक्षक बल (ICG), को 'तट रक्षक अनुकूलन परीक्षण (CoGAT)' सौंपे। इस परीक्षा को विकसित करने की आवश्यकता भारतीय तटरक्षक बल द्वारा पेश की गयी थी, जिसका उद्देश्य सेवा में नामांकित कार्मिक पदों के लिए उम्मीदवारों की



उपयुक्तता का आकलन करना था। वर्तमान परीक्षण एक स्क्रीनिंग उपकरण

है जो सात आयामों में उम्मीदवारों की उपयुक्तता का आकलन करता है।

एडीए ने एलसीए तेजस मार्क-1A के लिए स्वदेशी उन्नत तकनीक एक्चुएटर्स और एयरब्रेक कंट्रोल मॉड्यूल का पहला बैच एचएएल को सौंपा

वैमानिकी विकास एजेंसी (एडीए), बेंगलुरु, ने 19 अप्रैल 2024 को हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) को स्वदेशी रूप से विकसित उन्नत तकनीक एक्चुएटर्स और एयरब्रेक नियंत्रण मॉड्यूल का पहला बैच सौंपा। यह वैमानिकी प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। HAL, लखनऊ ने मौजूदा 83 एलसीए तेजस मार्क-1A ऑर्डर के लिए इन इकाइयों के उत्पादन की तैयारी पहले ही कर ली है।

एलसीए तेजस की द्वितीयक उड़ान नियंत्रण प्रणाली, जिसमें उन्नत तकनीक स्लैट्स और एयरब्रेक शामिल हैं, अत्याधुनिक सर्वो वाल्व-आधारित विद्युत-हाइड्रोलिक सर्वो एक्चुएटर्स और नियंत्रण मॉड्यूल से सुसज्जित है। ये उच्च दाब, अतिरिक्त सर्वो एक्चुएटर्स और नियंत्रण मॉड्यूल, जो कुशल डिजाइन, सटीक निर्माण, संयोजन और परीक्षण की विशेषता रखते हैं, स्वदेशी तकनीकी कौशल की निरंतर खोज में एडीए के प्रयासों का परिणाम है।

इन अग्रणी किस्म के उपकरणों के स्वदेशीकरण में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए वैमानिकी विकास एजेंसी ने हैदराबाद स्थित रिसर्च सेंटर ईमारत (आरसीआई) और बेंगलुरु स्थित केंद्रीय विनिर्माण प्रौद्योगिकी संस्थान (CMTI) के साथ सहयोग करने की योजना बनाई है। उन्नत तकनीक एक्चुएटर्स और एयरब्रेक नियंत्रण मॉड्यूल के उड़ान परीक्षणों की सफलता ने उत्पादन स्वीकृति का मार्ग प्रशस्त कर दिया है,



जिसने एचएएल को एलसीए तेजस के मार्क-1A संस्करण को सुसज्जित करने के लिए तैयार होने में सक्षम बनाया है।

एलसीए तेजस के इन महत्वपूर्ण घटकों का उत्पादन अब एचएएल, लखनऊ के सहायक उपकरण विभाग में चल रहा है, जो भारत की एयरोस्पेस विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। गौरतलब है कि इस प्रयास में मुंबई की गोदरेज एयरोस्पेस सहित सार्वजनिक

और निजी उद्योगों के साथ-साथ सेमीलेक और DGAQA जैसी प्रमाणन संस्थाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

सचिव, रक्षा अनुसंधान एवं विकास विभाग एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ; तथा महानिदेशक-एडीए ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने के लिए एडीए, आरसीआई, एचएएल, सीएमटीआई, और सभी सम्मिलित उद्योगों की पूरी टीम को बधाई दी।

7.62X54 R API (BIS 17051-2018 का स्तर 6) के विरुद्ध बुलेट प्रूफ जैकेट का विकास

रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर, ने सफलतापूर्वक एक बुलेट प्रूफ जैकेट विकसित कर लिया है जो 7.62X54 R API (BIS 17051-2018 का स्तर 6) गोलाबारूद के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है। BIS 17051-2018 के अनुसार, बुलेट प्रूफ जैकेट का चरम प्राक्षेपिकी अनुसंधान प्रयोगशाला (टीबीआरएल), चंडीगढ़, में सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया।

यह जैकेट एक नए डिजाइन दृष्टिकोण पर आधारित है जहां नई प्रक्रियाओं के साथ नवीन सामग्रियों का उपयोग किया गया है। बुलेट प्रूफ जैकेट का आगे वाला कठोर आर्मर पैनल (क्षेत्रफल के दो विकल्प: 1000 वर्ग सेमी और 750 वर्ग सेमी) संयोजन के साथ और स्टैंडअलोन डिजाइन दोनों ही स्थिति में 7.62X54 R API (स्नाइपर राउंड) के कई प्रहार (06 शॉट्स) को रोक सकता है।

एर्गोनॉमिक रूप से अभिकल्पित किया गया अग्र कठोर आर्मर पैनल मोनोलिथिक सिरैमिक प्लेट से बना है तथा पिछला भाग पॉलिमर से बना



है जो परिचालन के समय पहनने की क्षमता और आराम का बढ़ाता है। इस डिजाइन को पहनने में आसानी होती है और यह आरामदेह है। संयोजन के साथ

कठोर आर्मर पैनल और स्टैंडअलोन कठोर आर्मर पैनल का क्षेत्रीय घनत्व क्रमशः 40 किग्रा/मीटर² तथा 43 किग्रा/मीटर² से कम है।



परीक्षण किये गये कठोर आर्मर पैनल

डीआरडीओ युवा वैज्ञानिक सम्मलेन 2024

डीआरडीओ युवा वैज्ञानिक सम्मलेन के 10वां संस्करण का आयोजन मानव संसाधन विकास निदेशालय (डीएचआरडी) तथा नौसेना विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), द्वारा संयुक्त रूप से एनएसटीएल, विशाखापत्तनम, में 04-06 अप्रैल 2024 के दौरान किया गया। इसका उद्घाटन डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, ने 04 अप्रैल 2024 को किया। इस कार्यक्रम में देश भर की सभी डीआरडीओ प्रयोगशालाओं और प्रतिष्ठानों से कुल 160 युवा वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

डीआरडीओ युवा वैज्ञानिकों की बैठक युवा मस्तिकों के अभिसरण को सुविधाजनक बनाने तथा रक्षा विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित समसामयिक और भविष्य के विषयों पर नेटवर्क बनाने, बातचीत करने, साझा करने और चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए आयोजित की जाती है। 2011 में शुरू हुए, डीआरडीओ युवा वैज्ञानिक सम्मलेन ने एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देने का प्रयास किया है जहां उभरते वैज्ञानिक अपनी प्रतिभा दिखा सकते हैं, विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं और सहयोग कर सकते हैं।

इस वर्ष की बैठक का विषय 'फोर्जिंग कनेक्शंस टू इगनाइट माइंड्स' था। तीन दिवसीय बैठक में आमंत्रित वार्ता, समूह निर्माण गतिविधियाँ, नवाचार प्रतियोगिताएँ और तकनीकी सुविधाओं के दौरे शामिल थे। युवा वैज्ञानिक सम्मलेन 2024 के संयोजक श्री वी श्रीनिवास राव ने युवा वैज्ञानिक सम्मलेन 2024 के दौरान नियोजित विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी।

अपने स्वागत व्याख्यान में, डॉ अब्राहम वर्गीस, निदेशक, एनएसटीएल, ने युवा वैज्ञानिकों से अवसर का उपयोग करने और आत्मनिर्भर भारत के महान लक्ष्यों के



लिए नवाचार करने का आह्वान किया।

डॉ (श्रीमती) यू जेया संथी, महानिदेशक (मानव संसाधन), ने युवा वैज्ञानिकों को नवाचार का अग्रदूत बताया और डीआरडीओ में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

डॉ वाई श्रीनिवास राव, महानिदेशक (NS&M), ने राष्ट्र की रक्षा में युवा वैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बात की और कहा कि प्रतिबद्धता और समर्पण से उत्कृष्ट परिणाम मिलेंगे।

अपने उद्घाटन संबोधन में, डॉ कामत ने निर्धारित समयसीमा के भीतर उन्नत विश्व स्तरीय हथियारों के विकास की अनिवार्यता पर जोर दिया। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों को बदलती वैश्विक व्यवस्था और प्रौद्योगिकी प्रक्षेप पथ के अनुरूप ढलने और सर्वोत्तम

श्रेणी की रक्षा प्रणालियाँ विकसित करने की सलाह दी, जो डीआरडीओ को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी। प्रोफेसर जयराम एन चेंगलूर, निदेशक, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR), मुंबई, ने 'तकनीकी नवाचार' पर बात की।

युवा वैज्ञानिक सम्मलेन 2024 का उद्घाटन सत्र गणमान्य व्यक्तियों द्वारा युवा वैज्ञानिक सम्मलेन 2024 स्मारिका के विमोचन के साथ संपन्न हुआ। तीन दिवसीय कार्यक्रम में डीआरडीओ के महानिदेशक, डीआरडीओ युवा वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के निदेशकों, डीआरडीओ मुख्यालय के कॉर्पोरेट निदेशकों, एनएसटीएल के वैज्ञानिकों, और अधिकारियों, एनएसटीएल सिविल कर्मचारी संघ के सदस्यों, और वर्क्स कमेटी ने भाग लिया।



राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

डीएफआरएल, मैसूर

रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएफआरएल), मैसूर, में 28 फरवरी 2024 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। डॉ. डी डी वाडिकर, वैज्ञानिक 'एफ' ने 'मिलेट्स फॉर मिलिट्री राशन-पेलाटिबिलिटी, न्यूट्रीशन, एंड टैकनिकल चैलेंजस' विषय पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। अपने व्याख्यान में, उन्होंने जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों पर काबू पाने में मोटे अनाज के महत्व, मोटे अनाज के स्वास्थ्य लाभों, विभिन्न परिचालन वातावरणों में मोटे अनाज और आटे के भंडारण में चुनौतियों, मोटे अनाज पर आधारित डीएफआरएल द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों और खाद्य उत्पादों पर प्रकाश डाला। डॉ. अनिल दत्त सेमवाल, निदेशक, डीएफआरएल, ने डॉ. वाडिकर को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।



डीएसपी, हैदराबाद

विशेष परियोजना निदेशालय (DSP), हैदराबाद ने 28 फरवरी 2024 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया। अपने संबोधन के दौरान, सुश्री नैनी बीबम्मा, वैज्ञानिक 'एफ', निदेशक, मानव संसाधन,

ने इस दिन के महत्व के बारे में बात की। माननीय मुख्य अतिथि श्री भरत कुमार जी वी पी, वैज्ञानिक 'जी', DPD, NGC सिमुलेशन चंद्रयान-3 ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई। निदेशक डॉ. अनुपम शर्मा ने इस दिन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को संबोधित किया। श्री भरत कुमार ने 'चंद्रयान 3 का नियंत्रण प्रणाली अवलोकन' पर अपना संबोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने चंद्रयान 3 के मिशन उद्देश्यों, उपग्रह और रोवर सिस्टम कॉन्फिगरेशन, क्षेत्र चयन, लैंडिंग और साइट की बाधाओं और चंद्रयान 3 में विकसित नई प्रणालियों को अपने संबोधन में शामिल किया।



इनमास, दिल्ली

डॉ. कैलाश मांडा, वैज्ञानिक 'एफ' ने 28 फरवरी 2024 को नाभकीय औषिध तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, में 'विस्फोट-प्रेरित न्यूट्रोत्रॉमा: शमन और प्रबंधन' पर राष्ट्रीय विज्ञान दिवस व्याख्यान दिया। डॉ. मान्डा ने अपने प्रमुख प्रायोगिक निष्कर्षों के माध्यम से बार-बार कम तीव्रता वाली

विस्फोट तरंगों के संपर्क में आने से संभावित विनाशकारी तंत्रिका संबंधी प्रभावों को बताया। हालांकि आम तौर पर पारंपरिक निदान उपायों द्वारा ऐसी बीमारियों का निदान नहीं किया जाता है, लेकिन ब्लास्ट वेव ट्रॉमा को 'युद्ध का मौन घाव' माना जाता है।

व्यापक अध्ययनों और परिणामों ने जंतु मॉडल में विस्फोट तरंगों के कारण होने वाले हानिकारक तंत्रिका-व्यवहार संबंधी प्रभावों को प्रदर्शित किया है। इन मॉडलों से प्राप्त आंकड़ों का परीक्षण स्थल पर दीर्घकालिक जोखिम के बाद प्राप्त मानवीय आंकड़ों के साथ सह-संबंध स्थापित किया जाएगा। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष भेद्यता पैमाने, सुरक्षित दाब सीमा या जोखिम की आवृत्ति के आधार पर सुरक्षा उपायों को विकसित करने में मददगार होंगे। साथ ही, ऐसे वातावरणों में जहां निदान इमेजिंग सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, वहां संचलन तंत्र के जैव-चिह्नों का एक उपयुक्त पैनल न्यूट्रोत्रॉमा की गंभीरता को निर्धारित करने में सहायक हो सकता है।

डॉ. सुधीर चांदना, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक, इनमास, ने डॉ. कैलाश मांडा को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पदक और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह-2024

डेबेल, बेंगलुरु

रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलुरु, ने 28 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इस वर्ष, प्रोफेसर वसंती श्रीनिवासन, भारतीय प्रबंधन संस्थान, बेंगलुरु, एवं अध्यक्ष, डिजिटल लर्निंग और भारतीय प्रबंधन अकादमी की पूर्व अध्यक्ष, को नेतृत्व पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। प्रोफेसर श्रीनिवासन ने सामान्य नेतृत्व और लैंगिक संदर्भ के साथ विशिष्ट नेतृत्व के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने सच्ची लैंगिक समानता प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों और संस्थागत एवं व्यक्तिगत प्रयासों दोनों से इन चुनौतियों को दूर करने के तरीकों के बारे में बताया। डॉ. टीएम कोटरेश, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डेबेल, ने पिछले कुछ दशकों में दुनिया भर के विभिन्न क्षेत्रों में STEMM में महिलाओं की भूमिका के साथ-साथ डेबेल में महिलाओं के योगदान के बारे में बात की और सभी से संगठन के लिए सक्रिय रूप से योगदान करने का आग्रह किया।



डीएफआरएल, मैसूर

रक्षा खाद्य शोध प्रयोगशाला (डीएफआरएल), मैसूर ने 18 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया।

श्रीमती शैलजा वी आर, कर्नाटक प्रशासनिक सेवा (KAS), रजिस्ट्रार, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर, मुख्य अतिथि रहीं और डॉ. अनिल दत्त सेमवाल, निदेशक, डीएफआरएल, ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. शैलजा आर, वैज्ञानिक 'एफ', अध्यक्ष, महिला प्रकोष्ठ, द्वारा स्वागत सम्बोधन दिया गया। श्रीमती शैलजा ने लैंगिक समानता के महत्व पर प्रकाश डाला और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के आंकड़े प्रस्तुत किए। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि शीर्ष पदों और निर्णय लेने में महिलाओं का प्रतिशत बहुत कम है। उन्होंने समानता प्राप्त करने में महिलाओं के महत्व और भूमिका पर प्रकाश डाला। महिलाओं की उपलब्धियों पर आधारित एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।



डीआरएल, तेजपुर

रक्षा अनुसंधान प्रयोगशाला (डीआरएल), तेजपुर, द्वारा 13 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने के लिए 'महिलाओं में निवेश करें: प्रगति में तेजी लाएं' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष द्वारा स्वागत सम्बोधन और प्रकोष्ठ की गतिविधियों पर संक्षिप्त जानकारी के साथ हुई, उसके बाद निदेशक डॉ. देव व्रत कंबोज का संबोधन हुआ, जिन्होंने शिक्षा के माध्यम से महिलाओं में निवेश

करने की बात की, जिसका फल उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान के रूप में मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं का सम्मान घर से ही शुरू होना चाहिए। श्रीमती अमृत माधुरी देवी, मधुर फूड प्रोडक्ट्स की प्रोपराइटर, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने अपनी जीवन यात्रा के बारे में बात की और समग्र विकास के लिए सशक्तिकरण के माध्यम के रूप में शिक्षा के महत्व पर बल दिया। उन्होंने यह भी साझा किया कि जुनून के साथ दृढ़ संकल्प के साथ काम करने से सफलता और संतुष्टि मिलती है।



एचईएमआरएल, पुणे

उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल), पुणे, में 15 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। बड़े उत्साह के साथ, लगभग 350 महिला एचईएमआरएल कर्मचारियों ने समारोह में भाग लिया। समारोह के तहत, 14 मार्च 2024 को गैर-तकनीकी पुस्तकों की पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। डॉ. एपी दाश, निदेशक, एचईएमआरएल, द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। शिक्षाविद्, लेखिका, और सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मीता बनर्जी, को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपशिष्ट प्रबंधन के संबंध में अपने अनुभव और ज्ञान को साझा किया। उन्होंने अत्यधिक खरीदारी के प्रभाव

और कचरे को कम करने, पुनः उपयोग करने और पुनर्चक्रण के महत्व पर जोर दिया। इस चर्चा को दर्शकों ने खूब सराहा और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा की। सभी प्रतिभागियों ने पर्यावरण अनुकूल वातावरण बनाए रखने की शपथ भी ली।

इसके अलावा, मेहंदी, झाड़ंग, रंगोली, बाल और मेकअप जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उत्सव के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।



ईसा, दिल्ली

पध्दति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली, ने 12 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। इस अवसर पर, रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली, की वैज्ञानिक 'एफ', डॉ निधि माहेश्वरी, को 'मल्टी-टास्कर महिलाएं: तनाव और संतुलन' विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। अपने व्याख्यान में उन्होंने समाज में महिलाओं की बहुमुखी भूमिका, चुनौतियों और जीवन में काम और तनाव को संतुलित करने की तकनीकों पर जोर दिया।



एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

22 मार्च 2024 को कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सुश्री काइया अरोड़ा, निदेशक, डाक सेवाएँ, CPMG, बेंगलुरु; तथा सुश्री एंजेला नलिनी मार्गरेट, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक (PM), कार्यालय महानिदेशक (ECS); क्रमशः मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

मुख्य अतिथि द्वारा राजभाषा सदन की पत्रिका 'उमंग' का विमोचन भी किया गया।



एनपीओएल, कोच्चि

नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि ने 15 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया। श्रीमती हेमा एम, वैज्ञानिक 'जी', और महिला समिति की संयोजिका, ने मुख्य अतिथि और उपस्थितजनों का स्वागत किया। डॉ के अजीत कुमार, निदेशक, एनपीओएल, ने अपने संबोधन में जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के निरंतर समर्थन को दोहराया। श्रीमती सुजाता माधव चंद्रन, प्रमुख, स्ट्रेटेजिक इनिशिएटिव्स, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन सर्विसेज फॉर NGM, TCS द्वारा 'महिलाओं में निवेश करें-प्रगति में तेजी लाएं' विषय पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जब महिलाएं खुद को शामिल करने के लिए प्रेरित होती हैं, तो उनमें एक जुड़ाव की भावना और समावेश का अहसास होता है, और उन्होंने बताया कि समावेश ने उनके जीवन को कैसे बदल दिया है।

अस्विनी श्रीधर, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी और महिला समिति की सदस्या, ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।



एसएसपीएल, दिल्ली

ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल), दिल्ली में 10 मार्च 2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कार्यस्थल में महिलाओं की उपलब्धियों और योगदानों का सम्मान करने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। समारोह में मुख्य अतिथि श्रीमती वार्तिका शुक्ला, CMD, इंजीनियरिंग इंडिया लिमिटेड, द्वारा एक आकर्षक प्रेरणादायक व्याख्यान दिया गया, जिसमें लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद, महिला सहयोगियों की प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन करने वाले मनोरम सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। उत्सव आकर्षक खेलों और गतिविधियों के साथ जारी रहा।

एसएसपीएल परिवार महिलाओं की उपलब्धियों का उत्सव मनाने और कार्यस्थल पर लैंगिक समानता के लिए अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए एकजुट हुआ।



एनएसटीएल में डॉ बी आर अंबेडकर जन्मदिवस समारोह

14 अप्रैल 2024 को नौसेना विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), विशाखापत्तनम, द्वारा डॉ बी आर अंबेडकर की 133वीं जयंती भव्य तरीके से मनाई गई।

अतिथियों ने डॉ बी आर अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। उद्घाटन टिप्पणी में, श्री रवि आनंद कुमार, वैज्ञानिक 'एफ', ने कार्यक्रम और इस अवसर पर आयोजित गतिविधियों के बारे में जानकारी दी; श्री यू अर्बन कुमार, वैज्ञानिक 'डी' एवं एनएसटीएल अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति कर्मचारी कल्याण संघ के अध्यक्ष; तथा जेएन वर्मा, एनएसटीएल सिविल कर्मचारी संघ के महासचिव; ने सभा को संबोधित किया। अपने मुख्य व्याख्यान में, डॉ एस करुणा राजू, आईएएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी, RINL, विशाखापत्तनम, ने डॉ बाबासाहेब के दृष्टिकोण और



भारतीय संविधान के चार आधार स्तंभों, अर्थात् न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के बारे में बताया। उन्होंने सभी से आह्वान किया कि वे अंबेडकर के अनुयायी बनें और समाज तथा भाईचारे के असंतुलन को मिटाएं। मुख्य अतिथि

डॉ वाई श्रीनिवास राव ने सराहना करते हुए कहा कि डॉ अंबेडकर समाज के उत्थान के लिए भगवद गीता के श्लोक द्वारा समर्थित समानता स्थापित करने और मानवता को बचाने के लिए ईश्वर का अवतार हैं।

एसएसपीएल में स्थापना दिवस समारोह

ठोसावस्था भौतिकी प्रयोगशाला (एसएसपीएल), दिल्ली, ने 08 अप्रैल 2024 को अपना 62वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एयर मार्शल संदीप सिंह, PVSM, AVSM, VM (सेवानिवृत्त); तथा डॉ मीना मिश्रा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एसएसपीएल, द्वारा कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। अपने संबोधन के दौरान मुख्य अतिथि ने सभी कर्मचारियों को उत्सव के लिए बधाई दी और देश के लिए एसएसपीएल के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एसएसपीएल को उन प्रौद्योगिकियों पर गर्व होना चाहिए जिनके साथ वह काम कर रही है, यह हवाला देते हुए कि सेमीकंडक्टर



उपकरणों के लघुकरण ने समय के साथ ताकतों को बदल दिया है। इस अवसर पर, निदेशक, एसएसपीएल, ने वर्ष 2023 के दौरान गतिविधियों को पूरा करने के लिए एसएसपीएल के सभी कर्मचारियों के प्रति आभार और प्रशंसा व्यक्त की। इस अवसर पर एसएसपीएल

की वार्षिक रिपोर्ट 2023 और तकनीकी एवं साहित्यिक लेखों वाली हिंदी पत्रिका 'प्रतिबिंब' का विमोचन किया गया।

समारोह के हिस्से के रूप में, एनबी भट्ट विजन टू रियलिटी, स्लोगन प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और क्रिकेट, शतरंज, कैरम, बैडमिंटन, टेबल

टेनिस एवं वॉलीबॉल जैसे विभिन्न खेल आयोजित किए गए, एसएसपीएल के सभी सदस्यों ने उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। कार्यक्रम के विजेताओं को निदेशक, एसएसपीएल, द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ सुनील कुमार वैज्ञानिक 'एफ' ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

डीजीआरई द्वारा अग्नि सुरक्षा सप्ताह-2024 का आयोजन

रक्षा भू-सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई), चंडीगढ़, में 14 से 20 अप्रैल 2024 के दौरान 'राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए अग्नि सुरक्षा सुनिश्चित करें' विषय पर अग्नि सुरक्षा सप्ताह मनाया गया। इसका उद्देश्य राष्ट्र की दीर्घकालिक उन्नति के लिए सुरक्षित और अग्नि प्रतिरोधी वातावरण के महत्व को समझना था।

अग्नि सुरक्षा सप्ताह के एक भाग के रूप में, श्री एमके कलरा, सह-निदेशक, डीजीआरई, ने सभा को आग और विस्फोटों की तबाही के तहत जीवन की सुरक्षा, सुरक्षा सावधानियों और कार्यालय को कर्मचारियों के लिए सुरक्षित स्थान बनाने के उपायों के बारे में संबोधित किया। लेफ्टिनेंट कर्नल वासुल शर्मा,



सुरक्षा समूह प्रमुख, और अग्निशमन अनुभाग; श्री हरिकृष्णन जी, अग्निशमन और सुरक्षा अधिकारी; ने डीजीआरई के अग्निशमन कर्मियों श्री सुरजीत, श्री अमर

मलिक, और श्री नवीन कुमार के साथ डीजीआरई परिसर में निकासी अभ्यास के साथ आग की स्थिति का मॉक ड्रिल समन्वय और संचालन किया।

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह-2024

एचईएमआरएल, पुणे

प्रयोगशाला में सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उच्च ऊर्जा सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एचईएमआरएल), पुणे, ने 04 से 10 मार्च 2024 के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह मनाया।

राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह समारोह का आयोजन 07 मार्च 2024 को किया गया। श्री रुस्कन दमानी, उपाध्यक्ष, सुरक्षा एवं परिचालन जोखिम, रिलायंस इंडस्ट्रीज, मुंबई, इस अवसर पर मुख्य

अतिथि थे। सभी कर्मचारियों ने सुरक्षा शपथ ली। निदेशक, एचईएमआरएल, ने सभा को संबोधित करते हुए कार्यस्थल पर सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए कर्मचारियों के बीच एक सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति के महत्व पर बल दिया और कहा कि सुरक्षा उल्लंघनों के प्रति शून्य सहनशीलता होगी। मुख्य अतिथि के द्वारा सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण बुलेटिन का 27वां अंक जारी किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के

विजेताओं और सुरक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण बुलेटिन 2024 में सर्वश्रेष्ठ लेखों के लिए पुरस्कार वितरित किए गए।



इनमास, दिल्ली

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, में 04 से 10 मार्च 2024 के दौरान राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह, मनाया गया। इसका मुख्य केंद्र-बिंदु सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति का निर्माण करना, कर्मचारियों को कार्यस्थल को सुरक्षित बनाने के लिए प्रेरित करना और विभिन्न सुरक्षा गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ावा देना था। संस्थान के सभी कर्मचारियों ने दिशानिर्देशों के अनुसार सुरक्षा और स्वास्थ्य शपथ ली।

प्रो० राधेश्याम शर्मा, पर्यावरण विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, द्वारा 06 मार्च 2024 को एक तकनीकी प्रस्तुति दी गई। सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने इस प्रस्तुति में भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ० रौनक, वैज्ञानिक 'एफ', और संस्थान सुरक्षा अधिकारी, तथा उनकी टीम द्वारा किया गया



एमटीआरडीसी, बंगलुरु

सूक्ष्म तरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केंद्र (एमटीआरडीसी), बंगलुरु, में 53वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह 4 से 10 मार्च 2024 के दौरान मनाया गया। डॉ० एसके दत्ता, निदेशक, एवं केंद्र प्रमुख, एमटीआरडीसी, द्वारा सुरक्षा शपथ दिलाई गई और एक सुरक्षा व्याख्यान भी आयोजित किया गया। श्री सुशांत कुमार, अग्निशमन अधिकारी, सेना (सेवानिवृत्त), और जीटीआरई के सुरक्षा अधिकारी, ने "संकट के दौरान सुरक्षा

और तनाव प्रबंधन" पर एक व्याख्यान दिया। कार्यस्थल के संबंध में सुरक्षा की भावना जगाने के लिए एमटीआरडीसी सुरक्षा दल द्वारा 06 मार्च 2024 को एमटीआरडीसी के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए CO₂-आधारित अग्निशामकों के संचालन² पर एक व्यावहारिक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। एमटीआरडीसी कर्मचारियों के लिए 07 मार्च 2024 को एक सुरक्षा प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई, जिसमें केंद्र के अधिकारियों और कर्मचारियों दोनों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।



मानव संसाधन विकास क्रियाकलाप

डीआरडीओ मुख्यालय में DIA-COE निदेशकों का सम्मेलन

डीआरडीओ मुख्यालय, नई दिल्ली, में 12-13 मार्च 2024 के दौरान भविष्य प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय (डीएफटीएम), द्वारा दो दिवसीय DIA-COE निदेशकों का सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन डॉ० समीर वी कामत, सचिव, डी डी

आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, ने किया। सभी सत्र डॉ० सुब्रत रक्षित, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (TM & SAM), की अध्यक्षता में 'भविष्य की प्रौद्योगिकियों के लिए निर्देशित अनुसंधान को मजबूत करना' विषय पर आयोजित किए गए। सम्मेलन का

उद्देश्य डीआरडीओ के वर्तमान और भविष्य के कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण अग्रिम प्रौद्योगिकियों के लिए निर्देशित अनुसंधान सहयोग को मजबूत करना था। दो दिवसीय सम्मेलन कार्यक्रम में डीआरडीओ की निर्देशित अनुसंधान नीति के तहत चिंताओं और मुद्दों



को संबोधित करने के लिए विशिष्ट सत्रों पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें डीआरडीओ की भविष्य की प्रौद्योगिकी आवश्यकताओं के अनुरूप डीआरडीओ-उद्योग-शिक्षा जगत के उत्कृष्टता केंद्रों (DIA-COE) में तंत्र और मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) को विकसित करने पर ध्यान दिया गया।

डॉ कामत ने अपने संबोधन में शैक्षणिक संस्थानों से उद्योगों तक

अनुसंधान के सार्थक परिवर्तन के लिए शिक्षा जगत, उद्योग और डीआरडीओ के मध्य ऊर्जा का निर्माण करके DIA-COE के माध्यम से एक जीवंत अनुसंधान एवं विकास पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने पर बल दिया। डॉ रक्षित ने DIA-COE की स्थापना में डीआरडीओ के इरादे को स्पष्ट किया। उन्होंने बताया कि इन केंद्रों से अवसरों में सुधार और अनुसंधान

को स्थायी गति से बढ़ावा देने की अपेक्षा है।

डॉ एन रंजना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएफटीएम, ने सभी केंद्रों की आवश्यकताओं को युक्तिसंगत बनाने, आधारभूत बनाने और एक समान तरीके से निर्देशित अनुसंधान सहयोग में समस्याओं और बाधाओं को हल करने की आवश्यकता के विषय पर जानकारी दी।

भारतीय वायु सेना के लिए AI पर कार्यशाला

वायु सेना प्रमुख के वैज्ञानिक सलाहकार (SA to CAS) के कार्यालय ने 14-15 मार्च 2024 के दौरान वायु सेना स्टेशन, नई दिल्ली में भारतीय वायु सेना के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर एक कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ समीर वी कामत, सचिव, डी डी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ; एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित, AVSM, VM, VSM, उप वायु सेना प्रमुख; तथा डॉ (श्रीमती) चंद्रिका कौशिक, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (PC&SI), की गरिमामयी



उपस्थिति में हुआ। अपने संबोधन में DCAS ने कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों का उल्लेख किया, जैसे कॉकपिट में विमान

और हवाई संचालन, जहां भारतीय वायु सेना द्वारा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जा सकता है।

एक्सोस्केलेटन के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों और चुनौतियों पर कार्यशाला

“एक्सोस्केलेटन के लिए उभरती प्रौद्योगिकियाँ और चुनौतियाँ” पर पहली अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 16-17 अप्रैल 2024 के दौरान रक्षा जैव प्रौद्योगिकी और विद्युत चिकित्सकीय प्रयोगशाला (डेबेल), बेंगलुरु, द्वारा किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन डॉ समीर वी कामत, सचिव, डीडी आर एंड डी एवं अध्यक्ष, डीआरडीओ, ने चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी (CISC) के अध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल जेपी मैथ्यू की उपस्थिति में किया। अपने मुख्य संबोधन में, डॉ कामत ने परिवर्तनकारी



एक्सोस्केलेटन तकनीक के महत्व और सैन्य एवं नागरिक वातावरण में इसके

व्यापक अनुप्रयोगों पर बल दिया। उन्होंने अनुसंधान एवं विकास समुदाय,

सशस्त्र बल, उद्योग और शिक्षा जगत सहित विभिन्न हितधारकों से आह्वान किया कि वे चुनौतियों का समाधान करने और भविष्य के एक्सोस्केलेटन के लिए रोडमैप तैयार करने के लिए मिलकर काम करें।

इस अवसर पर बोलते हुए, सीआईएससी ने एक्सोस्केलेटन शोध के इतिहास, इसके शुरुआती प्रोटोटाइप

और इसकी चुनौतियों का वर्णन किया। उन्होंने यह भी बताया कि दोहरे उपयोग वाली इस एक्सोस्केलेटन तकनीक में व्यापारिक क्षमता भी है।

ईटीएच ज्यूरिख के प्रो० रॉबर्ट रेनर और नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी, शिकागो, इलिनोइस के प्रो० अरुण जयरामन, ने जानकारीपूर्ण, गहन तकनीकी वार्ता की। डॉ० यूके सिंह, महानिदेशक (LS),

ने सशस्त्र बलों की आसन्न चुनौतियों और आवश्यकताओं के बारे में बात की। दो दिवसीय कार्यशाला में डीआरडीओ, सेवाओं, उद्योग, शिक्षा जगत और शोधकर्ताओं के 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

एक्सोस्केलेटन तकनीक में पहनने योग्य संरचनाएं शामिल होती हैं जो मानव शरीर की क्षमताओं को बढ़ाती हैं।

डीआरडीओ मुख्यालय में युद्ध सिमुलेशन पर सेमिनार

डीआरडीओ मुख्यालय के भविष्य प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय (डीएफटीएम), ने 21 मार्च 2024 को डीआरडीओ मुख्यालय में युद्ध सिमुलेशन पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों, रक्षा विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, और उद्योग जगत के नेताओं को एक साथ लाया गया, ताकि सिमुलेशन प्रौद्योगिकियों के माध्यम से आधुनिक सैन्य रणनीति और तैयारियों की पेचीदगियों को समझा जा सके। संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० सुब्रत रक्षित, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (TM & SAM), ने की। उन्होंने व्यावसायिक और मनोरंजन क्षेत्रों में उपलब्ध गेमिंग उत्पादों और सैन्य उपयोग के लिए तैयार किए गए



वॉरगेमिंग सॉफ्टवेयर के बीच अंतर को स्पष्ट किया।

डॉ० एन रंजना, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएफटीएम, ने अपने संबोधन में रक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सिमुलेशन की महत्वपूर्ण भूमिका को

रेखांकित किया। इन क्षेत्रों में सिस्टम डिजाइन, परीक्षण, विश्लेषण प्रशिक्षण और रखरखाव शामिल हैं। श्री एसबी तनेजा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, ईसा, ने नौसेना और स्थल युद्ध प्रणालियों के बारे में जानकारी प्रदान की।

सीफीस में अग्निशमन पर पाठ्यक्रम

कौशल विकास केंद्र (SDC) पिलखुवा; अग्नि, विस्फोटक तथा पर्यावरण सुरक्षा केंद्र (CFEES), दिल्ली का एक प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान है। एसडीसी सेना, नौसेना, वायु सेना, तटरक्षक बल और विभिन्न अन्य सरकारी संगठनों के लिए लगातार आवासीय अग्निशमन पाठ्यक्रम आयोजित करता रहता है। इनमें से अधिकांश पाठ्यक्रम रक्षा मंत्रालय (दमकल सेवा) कर्मियों के पदोन्नति उन्नयन के लिए हैं। हाल ही में एसडीसी ने तीन महीने की अवधि का 166वां सामान्य अग्निशमन पाठ्यक्रम पूरा किया है। पाठ्यक्रम का उद्घाटन



08 जनवरी 2024 को नौसेना अनुसंधान बोर्ड के सदस्य सचिव द्वारा किया गया। पाठ्यक्रम में कुल 60 प्रशिक्षुओं

ने भाग लिया, जिनमें से 57 प्रशिक्षु सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए। पाठ्यक्रम का समापन 29 मार्च 2024 को हुआ।

एनएमआरएल में नौसेना प्लेटफार्मों की विशेष पॉलिमर कोटिंग्स पर पाठ्यक्रम

नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल), अंबरनाथ ने 15-19 अप्रैल 2024 के दौरान 'नौसेना प्लेटफार्मों के जंग से संरक्षण के लिए विशेष पॉलिमर कोटिंग्स' पर एक पाठ्यक्रम का आयोजन किया। श्री पीके सिंह, वैज्ञानिक 'जी', कार्यवाहक निदेशक, एनएमआरएल, ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। पाठ्यक्रम के दौरान विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं; IGCAR, कलपक्कम; UICT, जलगांव; मुंबई विश्वविद्यालय; शालीमार पेंट्स, नासिक; अनुवी पेंट्स, मुंबई; गैमरी, मुंबई; एल्के सिलिकॉन, पुणे; 20 माइक्रोन, मुंबई; और टैलिसमैन थर्मोक्योर, पुणे; के वक्ताओं ने व्याख्यान



दिए। व्याख्यान जानकारीपूर्ण थे जिससे समुद्री क्षेत्र के लिए पॉलिमर कोटिंग्स पर नवीनतम रुझानों के बारे में प्रतिभागियों के ज्ञान का अद्यतन हुआ।

एनएमआरएल के अनुसंधान क्षेत्रों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए प्रतिभागियों के लिए एनएमआरएल के विभिन्न प्रभागों का दौरा भी आयोजित किया गया।

डीआईपीआर में सूचना युद्ध पर कार्यशाला

11 मार्च 2024 को रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), दिल्ली, में सूचना युद्ध पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में आर्मी वार कॉलेज (AWC) के 31 अधिकारियों

(ब्रिगेडियर, कर्नल, लेफ्टिनेंट कर्नल और मेजर) ने भाग लिया।

डॉ अरुणिमा गुप्ता, निदेशक, डीआईपीआर ने स्वागत व्याख्यान दिया और भारतीय सशस्त्र बलों के

अधिकारियों के चयन, प्रशिक्षण, संचालन संबंधी तैयारी और प्रभावशीलता में प्रयोगशाला के योगदान को साझा किया। कार्यशाला में सूचना युद्ध और संज्ञानात्मक युद्ध के क्षेत्र में प्रमुख



क्षेत्रों को उजागर किया गया, जैसे धारणा प्रबंधन, प्रभाव अभियान, संघर्ष के वातावरण में बातचीत, नैरेटिव और

काउंटर-नैरेटिव, प्रोपोगेंडा और भीड़ व्यवहार विश्लेषण। कार्यशाला में प्रचार रणनीतियों की प्रयोज्यता और संघर्ष के

वातावरण में व्यक्तियों और समूहों को समझने सहित कई उभरते मुद्दों को भी शामिल किया गया।

परमाणु चिकित्सा और अनुसंधान में साइक्लोट्रॉन संचालन और विकिरण श्रमिकों की सुरक्षा पर अभ्यास

नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), दिल्ली, ने 13-15 मार्च 2024 के दौरान 'साइक्लोट्रॉन संचालन, थेरानोस्टिक न्यूक्लाइड्स की हैंडलिंग और नाभिकीय औषधि एवं अनुसंधान में विकिरण श्रमिकों की सुरक्षा' पर तीन दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ यूके सिंह, महानिदेशक (LS) और डॉ सुधीर चांदना, निदेशक, इनमास ने किया। डॉ पूजा पी हजारी, वैज्ञानिक 'एफ', पाठ्यक्रम निदेशक थीं, और डॉ सुखवीर सिंह, वैज्ञानिक 'ई', उप पाठ्यक्रम निदेशक थे।

कार्यक्रम में सेना अस्पताल (शोध एवं रेफरल), दिल्ली; कमांड अस्पताल (दक्षिणी कमान), पुणे; कमांड



अस्पताल (मध्य कमान), लखनऊ; कमांड अस्पताल (पूर्वी कमान), कोलकाता; कमांड अस्पताल (वायुसेना), बैंगलोर; कमांड अस्पताल (उत्तरी कमान), चंडीमंदिर; आईएनएचएस अश्विनी नौसेना अस्पताल, मुंबई; और डीआरडीओ प्रयोगशालाओं के परमाणु

चिकित्सा विशेषज्ञों तथा विकिरण सुरक्षा अधिकारियों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय हित में साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सशस्त्र बलों, राष्ट्रीय एवं अनुसंधान संस्थानों तथा परमाणु ऊर्जा विभाग के बीच समन्वय स्थापित करना था।

एनएमआरएल में उन्नत संस्कारण नियंत्रण प्रौद्योगिकियों पर कार्यशाला

24 अप्रैल 2024 को नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (एनएमआरएल), अंबरनाथ, में विश्व संस्कारण जागरूकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर, एनएमआरएल द्वारा एसोसिएशन फॉर मैटेरियल्स प्रोटेक्शन एंड परफॉर्मेंस के सहयोग से 'नौसेना प्लेटफार्मों के लिए उन्नत संस्कारण नियंत्रण प्रौद्योगिकियों' पर एक तकनीकी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ वाई श्रीनिवास राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक,



(NS&M), तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ वी वेंकटेश्वर राव, निदेशक, DIA-COE, IIT बॉम्बे, उपस्थित थे। श्री पीटी रोजतकर, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, एनएमआरएल, ने कार्यशाला के अतिथियों और प्रतिभागियों का

स्वागत किया। निदेशक, एनएमआरएल, ने अपने संबोधन में कार्यशाला आयोजित करने की प्रेरणा और उद्देश्य को बताया। कार्यशाला के दौरान शिक्षा जगत, भारतीय नौसेना और उद्योगों से संस्कारण संरक्षण के क्षेत्र की प्रसिद्ध

हस्तियों ने व्याख्यान दिए। कार्यशाला में विभिन्न भारतीय नौसेना कमानों, शिक्षा जगत, DGQA एजेंसियों, उद्योगों, एनएमआरएल और डीआरडीओ की सहयोगी प्रयोगशालाओं के लगभग 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

डीआरडीएल में मिसाइल प्रणालियों के उत्पाद अभिकल्पन और विनिर्माण: प्रवृत्तियाँ और अभ्यास पर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला (डीआरडीएल), हैदराबाद, ने 02-03 अप्रैल 2024 के दौरान डीआरडीएल के वैज्ञानिकों बी, सी और डी के लिए 'मिसाइल प्रणालियों के उत्पाद अभिकल्पन और विनिर्माण-प्रवृत्तियाँ और अभ्यास' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया।

उद्घाटन समारोह के दौरान, श्री बी हरि प्रसाद, वैज्ञानिक 'जी', समूह निदेशक, इंजीनियरिंग, ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, आमंत्रितों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और पाठ्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ जे वी आर सागर, प्रधान वैज्ञानिक और कार्यवाहक निदेशक, डीआरडीएल, ने मुख्य अतिथि श्री ए के

चक्रबरती, पूर्व निदेशक, डीआरडीएल; डॉ के नागेश्वर राव, वैज्ञानिक 'जी' एवं निदेशक, डेसीडॉक; डॉ सीवीएस मूर्ति, प्रधान वैज्ञानिक और सहयोगी निदेशक (इंजीनियरिंग और परीक्षण); श्री हरि प्रसाद, वैज्ञानिक 'जी' पाठ्यक्रम निदेशक; और डॉ जे जॉन रोजारियो जगराज, वैज्ञानिक 'एफ' पाठ्यक्रम समन्वयक की उपस्थिति में पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया।

श्री एके चक्रबरती द्वारा लिखित 'इन्वेस्टिव प्रैक्टिसेज इन प्रोडक्ट डवलपमेंट थ्रु द आईज ऑफ ए प्रोडक्ट डवलपर' शीर्षक वाले मोनोग्राफ का भी विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि श्री चक्रबरती को मोनोग्राफ लिखने की दिशा में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए

डीआरडीएल द्वारा विशिष्ट आमंत्रित अतिथियों डॉ आर बालमुरलीकृष्णन, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएमआरएल; डॉ अनुपम शर्मा, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएसपी; तथा कार्यक्रम निदेशकों, परियोजना निदेशकों, समूह निदेशकों और डीआरडीएल के प्रौद्योगिकी निदेशकों की उपस्थिति में सम्मानित किया गया।

श्री चक्रबरती ने उत्पाद विकास में अपने विशाल अनुभव को साझा करते हुए मुख्य व्याख्यान भी दिया और नए उत्पादों के विकास और बड़े पैमाने पर उत्पादन में उत्पाद इंजीनियरिंग के महत्व पर बल दिया। अंत में, डॉ जगराज ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।



इनमास में विकिरण प्रतिउपायों और विकिरण रसायन विज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला

13 मार्च 2024 को दिल्ली स्थित नाभिकीय औषधि तथा संबद्ध विज्ञान संस्थान (इनमास), में एक अंतर्राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला आयोजित की गई। व्याख्यान श्रृंखला का उद्देश्य AFRRRI, ओकलैंड विश्वविद्यालय और इनमास के बीच विकिरण सुरक्षा अनुसंधान गतिविधियों के बारे में सहयोग और चर्चा करना था। व्याख्यान श्रृंखला संयुक्त राज्य अमेरिका के दो प्रतिष्ठित वक्ताओं द्वारा दी गई जो विकिरण प्रतिउपायों और विकिरण रसायन के क्षेत्र में काम करते हैं।

प्रोफेसर विजय के सिंह, ASOM-

AFRRRI और यूनिफॉर्मड सर्विसेज, यूनिवर्सिटी ऑफ द हेल्थ साइंसेज, बेंथेस्टा, तथा प्रोफेसर अमिताव अधिकारी, रसायन विज्ञान विभाग, ओकलैंड विश्वविद्यालय, ने क्रमशः 'विकिरण सिंड्रोम के लिए आशाजनक विकिरण प्रतिउपायों का विकास: प्रभावकारिता और बायोमार्कर' और 'विकिरण रसायन का अन्वेषण: विकिरण जीव विज्ञान और रेडियोथेरेपी के लिए निहितार्थ' पर व्याख्यान दिए। वक्ताओं को डॉ यूके सिंह, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं महानिदेशक (LS) तथा निदेशक, इनमास द्वारा सम्मानित किया गया।



डीजीआरई ने डेसीडॉक के सहयोग से तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया

रक्षा भू-सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई), चंडीगढ़, ने रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली, के सहयोग से 10 अप्रैल 2024 को चंडीगढ़ में 'उच्च गुणवत्ता वाले तकनीकी पत्र लिखना और डीआरडीओ द्वारा सब्सक्राइब किए गए ई-संसाधनों का प्रभावी उपयोग' विषय पर एक तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया जिसका उद्देश्य डीजीआरई अधिकारियों को शोध पत्र लिखने में उनके बेहतर योगदान के लिए ज्ञान बढ़ाना था। डॉ पीके सत्यवाली, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीजीआरई, ने निदेशक, डेसीडॉक, डॉ के नागेश्वर राव, और उनकी टीम श्री सुधांशु भूषण तथा श्रीमति दीप्ति अरोड़ा का हार्दिक स्वागत और

आभार व्यक्त किया। डॉ पीके सत्यवाली ने शोध पत्र लिखने और प्रकाशित करने में शामिल तकनीकी पहलुओं की विस्तृत समझ विकसित करने के लिए डीजीआरई परिवार को संबोधित किया। डेसीडॉक टीम ने तकनीकी रूप से मजबूत शोध पत्र लिखने के महत्व से लेकर, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रिकाओं में उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशन के मार्ग पर चलना, स्कोपस डेटाबेस, शोध पत्रों की गुणवत्ता में सुधार के लिए साहित्यिक चोरी से बचना, ज्ञान वृद्धि के लिए डीआरडीओ के ई-संसाधनों का उपयोग, डीआरडीओ ई-लाइब्रेरी प्लेटफॉर्म और डीआरडीओ प्रकाशनों के बारे में विविध विषयों को कवर किया। कार्यशाला में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।



डीजीआरई एमएमसी सासोमा द्वारा सियाचिन बैटल स्कूल में सैन्य कर्मियों के लिए हिमस्खलन जागरूकता प्रशिक्षण

भारतीय हिमालय के सियाचिन में परिचालन कर्तव्यों और प्रतिबद्धताओं पर सुरक्षित गतिशीलता के लिए सैनिकों की तैयारी को बढ़ाने के लिए, अप्रैल 2024 में एमएमसी सासोमा, रक्षा भू-विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (DGRE), चंडीगढ़ द्वारा सियाचिन बैटल स्कूल में शामिल होने से पहले प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे अधिकारियों (09 संख्या), JCO (08 संख्या) और OR (175 संख्या) की इकाइयों के लिए हिमपात-मौसम संबंधी आंकड़े संग्रहण और हिमस्खलन जागरूकता प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कैप्टन सुमित ओझा, मौसम अधिकारी ने उन्हें विभिन्न प्रकार के हिम और हिमस्खलन, उपकरणों से हिमपात-मौसम संबंधी आंकड़ों का संग्रहण एवं स्थापित AWS



और इसके संचरण के बारे में अवगत कराया। सैनिकों को सियाचिन के उन बफीर्ले क्षेत्रों में विभिन्न हिमस्खलन

सुरक्षा-बचाव प्रक्रियाओं और परिचालन मुद्दों के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी गई, जो हिमस्खलन संवेदनशील क्षेत्र है।

एनपीओएल में हिंदी कार्यशाला

नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, ने 07 मार्च 2024 को सभी वैज्ञानिक 'एफ' के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। श्री वी एस शेनॉय, वैज्ञानिक 'जी', सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति (OLIC), ने कार्यशाला का उद्घाटन किया और उद्घाटन संबोधन दिया। श्री वी एस शेनॉय ने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला और सरकारी गतिविधियों में इसके उपयोग पर बल दिया।

डॉ मधुशील अयिलियथ, प्रबंधक और प्रभारी, राजभाषा प्रकोष्ठ, RBI, कोच्चि द्वारा व्याख्यान दिए गए।

इस कार्यशाला का शीर्षक था 'राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में कार्यपालिका की भूमिका, संसदीय



राजभाषा समिति और हिंदी के परिप्रेक्ष्य में प्रौद्योगिकी के नए रुझान।

श्री रामलोचन अवस्थी, वैज्ञानिक

'ई' और सदस्य सचिव, OLIC ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तावित किया।

एमटीआरडीसी में हिंदी कार्यशाला

सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (एमटीआरडीसी), बंगलुरु, में 12 मार्च 2024 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

श्री एस के श्रीवास्तव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सेवानिवृत्त), इलेक्ट्रॉनिक्स एवं रडार विकास स्थापना (एलआरडीई), बंगलुरु, ने 'राजभाषा नीतिनियम एवं CCS आचरण नियम' पर व्याख्यान दिया।



एनआईटी-वारंगल में राष्ट्रीय सम्मेलन में डेसीडॉक की भागीदारी

रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केंद्र (डेसीडॉक), दिल्ली, ने 26-27 अप्रैल 2024 के दौरान NIT, वारंगल में आयोजित 'नेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इमर्जिंग लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज' में भाग लिया। डॉ. के. नागेश्वर राव, निदेशक, डेसीडॉक, उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। निदेशक, डेसीडॉक, ने अपने व्याख्यान के दौरान वर्तमान के बदलते परिदृश्यों में पुस्तकालयों की महत्वपूर्ण

भूमिका और विभिन्न परियोजनाओं और कार्यों के माध्यम से डीआरडीओ और एनआईटी-वारंगल के जुड़ाव के बारे में बताया। प्रोफेसर बिधाद्यर सुबुधि, निदेशक, एनआईटी, वारंगल; प्रोफेसर बी. रमेश बाबू, विजिटिंग प्रोफेसर, महासारखाम विश्वविद्यालय, थाईलैंड; प्रोफेसर के. आनंद किशोर कोला, अध्यक्ष, एलएसी, एनआईटी वारंगल; डॉ. जी. रथिनासबापथी, सम्मेलन निदेशक; और डॉ. वीरनानेयुलु,

आयोजक सचिव और पुस्तकालय अध्यक्ष, एनआईटी वारंगल, भी इस अवसर पर उपस्थित थे। डॉ. वीरनानेयुलु के सम्मान में गणमान्य व्यक्तियों ने 150 शोध पत्रों के साथ सम्मेलन की कार्यवाही और एक फेस्टस्क्रिप्ट वॉल्यूम भी जारी किया। दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान डॉ. फैजुल निशा, तकनीकी अधिकारी 'बी', को भी सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार मिला।



उच्च योग्यता अर्जन



श्री लोकेश श्रीवास्तव, वैज्ञानिक 'एफ', उन्नत प्रणाली प्रयोगशाला (एएसएल), हैदराबाद, को उनके शोध शीर्षक 'स्टडीज ऑन लाइफ एस्पेक्ट्स ऑफ फिलामेंट वाउंड कम्पोजिट्स फॉर एयरोस्पेस एप्लिकेशन्स' के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT), वारंगल, तेलंगाना, से मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से PhD की उपाधि प्रदान की गई।



श्रीमती रेमा देवी एम, वैज्ञानिक 'जी', नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, को उनके शोध शीर्षक 'इन्वेस्टीगेशन ऑन कैंसलेशन ऑफ सेल्फ-नॉइज-इंडयुज्ड इंटरफेरेंस इफेक्ट्स इन पैसिव टोड ऐरे सोनार फॉर शैलो ओसियन ऑपरेशन्स'

के लिए कोचीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से प्रौद्योगिकी संकाय के अंतर्गत PhD की उपाधि प्रदान की गई।

पेटेंट प्रदान किए गए

डीजीआरई, चंडीगढ़

भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा प्रेम दत्त, प्रमोद कुमार सत्यवाली, प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, जगदीश चंद्र कपिल, और विनोद कुमार को 'ए डिवाइस फॉर डिटर्मिनिंग एंड रिकॉर्डिंग पैरामीटर्स रिलेटेड टू स्नोफॉल' के लिए पेटेंट संख्या 477473 प्रदान किया गया।

एनपीओएल, कोच्चि

भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, से डीडी एबेनेजर, एवं अन्य, को 'सिस्टम एंड मेथड फॉर डिटर्मिनिंग फार फील्ड ट्रांसमिशन एंड रिसेप्शन

करैक्टरस्टिक्स ऑफ सोनार सिस्टम' के लिए पेटेंट संख्या 452513 प्रदान किया गया।

भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा नौसेना भौतिक और समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला (एनपीओएल), कोच्चि, से निर्मल मोहन, सैमुअल थियोफिलस एम, और शामकुमार एस, को 'मॉड्यूलर एंड स्केलेबल डेटा एक्वीजीशन सिस्टम फॉर थिन लाइन टोड ऐरे' के लिए पेटेंट संख्या 467222 प्रदान किया गया।

एनएसटीएल, विशाखापत्तनम

भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा नौसेना विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला (एनएसटीएल), से डॉ राम कृष्ण वाराणसी, श्री वेंकट सत्य गणेश कुमार पक्की, श्री शंकर राव चल्ला, और डॉ सूर्यनारायण चीपुरुपल्ली, तथा NIT, वारंगल से डॉ बंगारू बाबू पोपुरी को 'ए मरीन प्रोपेलर' के लिए पेटेंट संख्या 510504 प्रदान किया गया।

डीआरडीओ प्रयोगशालाओं में आगंतुक

डीजीआरई, एमएमसी सासोमा

सरकारी मिडिल स्कूल, टोंगस्टेड (नुब्रा), लद्दाख के 16 स्कूली छात्रों और 10 शिक्षण स्टाफ सदस्यों ने 30 मार्च 2024 को शैक्षणिक भ्रमण पर एमएमसी सासोमा, रक्षा भू-सूचना विज्ञान अनुसंधान प्रतिष्ठान (डीजीआरई) का दौरा किया। छात्रों को बर्फ से जुड़े खतरों, भारतीय हिमालय के बरफीले क्षेत्रों में हिमस्खलन के खतरों, डीजीआरई के बर्फ-मौसम संबंधी डेटा उपकरणों और उनके संचालन के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें सैनिकों द्वारा हिमस्खलन पूर्वानुमान के लिए डीजीआरई के डेटा उपयोग के लिए स्वचालित मौसम केंद्र (AWS) और उसके संचरण के बारे में भी बताया।



उन्हें सियाचिन के उन बर्फीले हिमाच्छादित क्षेत्रों में विभिन्न हिमस्खलन सुरक्षा-बचाव प्रक्रियाओं के बारे में भी विस्तार से बताया गया, जो हिमस्खलन के लिए संवेदनशील हैं।

डिपास, दिल्ली

इंस्टीट्यूट ऑफ नेवल मेडिसिन (INM), मुंबई, के निदेशक सर्जन कमोडोर जे श्रीधर ने 04 अप्रैल 24 को रक्षा शरीर क्रिया एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (डिपास), दिल्ली, का दौरा किया। डॉ राजीव वार्ष्णेय, निदेशक, डिपास, ने उनका स्वागत किया, इसके बाद वरिष्ठ वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श और बातचीत हुई। उन्होंने नौसेना सेवाओं की शारीरिक आवश्यकताओं, उनके एर्गोनोमिक अध्ययन, पोषण संबंधी

मांगों और ऑडियो-सोनिक्स पर चर्चा की। चर्चा के परिणाम को आईएनएम द्वारा नौसैन्य कमांडो, पनडुब्बी चालक दल और एक्सोस्केलेटन (ऊपरी धड़) पर प्रदर्शित अध्ययन की आवश्यकता में परिलक्षित किया गया। आईएनएम ने विभिन्न गहराईयों और तापमान सीमाओं के आधार पर गोताखोरों के शरीर क्रिया विज्ञान में परिवर्तन को लक्षित करने वाले एक संयुक्त कार्यक्रम की आवश्यकता व्यक्त की। आईएनएम के निदेशक ने ऐसे सिमुलेशन टैंकों की इच्छा व्यक्त की जहां पानी का तापमान नियंत्रित किया जा सके और गहराई अधिमानतः 30 मीटर के आसपास हो। यह प्रस्तावित किया गया कि डिपास और आईएनएम गैर-घातक ध्वनिक हथियारों, नौसेना एक्सोस्केलेटन और समुद्री बीमारी की संवेदनशीलता निर्धारित करने के लिए व्यक्तिगत शारीरिक कारकों से संबंधित क्षेत्रों में संयुक्त रूप से काम कर सकते हैं।

डीआरएल, हैदराबाद

रक्षा अनुसंधान और विकास विभाग के मानद सलाहकार एडमिरल करमबीर सिंह, PVSM, AVSM, (सेवानिवृत्त), ने चल रही परियोजनाओं की समीक्षा के लिए 02 अप्रैल 2024 को रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएलआरएल), हैदराबाद, का दौरा किया। उनके साथ कमांडोर सुनील पांडे और भारतीय नौसेना के



सर्जन कमांडोर जे श्रीधर, निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ नेवल मेडिसिन, मुंबई, डिपास, दिल्ली, में अपने दौरे के दौरान

अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी थे। श्री एन श्रीनिवास राव, विशिष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएलआरएल, ने एडमिरल करमबीर सिंह और भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत किया।

समीक्षा बैठक में प्रौद्योगिकी और प्रणाली समूहों के निदेशकों और परियोजना निदेशकों ने भाग लिया। श्री तपस कुमार हाजरा, एससी 'जी', ने प्रगतिशील परियोजनाओं की स्थिति, प्राप्त उपलब्धियों और पूर्व बातचीत के दौरान उजागर किए गए मुद्दों पर की गई कार्रवाई पर एक प्रस्तुति दी। बैठक में इलेक्ट्रॉनिक युद्धक्षेत्र डोमेन से संबंधित महत्वपूर्ण तकनीकी मुद्दों पर भी चर्चा की गई।

डीएमएसआरडीई, कानपुर

लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी, PVSM, AVSM, VCOAS ने 23 अप्रैल 2024 को रक्षा सामग्री एवं भण्डार अनुसंधान तथा विकास स्थापना (डीएमएसआरडीई), कानपुर, का दौरा किया। उनके साथ मेजर जनरल सी एस मान, VSM, एडीजी आर्मी डिजाइन ब्यूरो, थे। डॉ मयंक द्विवेदी, उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक, डीएमएसआरडीई, ने VCOAS का स्वागत किया और उन्हें डीएमएसआरडीई की तकनीकी गतिविधियों और चल रही अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। इसके बाद डीएमएसआरडीई द्वारा सिरेमिक्स और सिरेमिक्स मैट्रिक्स



लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी, डीएमएसआरडीई, कानपुर में अपने दौरे के दौरान

कंपोजिट्स (CMCs), स्टील्थ और छलावरण सामग्री, नैनोमटेरियल्स, कोटिंग्स, पॉलिमर और रबर, ईंधन और स्नेहक, तकनीकी वस्त्र और व्यक्तिगत सुरक्षा प्रणालियों के क्षेत्र में डीएमएसआरडीई द्वारा विकसित उत्पादों और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया। उन्होंने डीएमएसआरडीई टीम जिसमें सहयोगी निदेशक और विभाग प्रमुख शामिल थे, के साथ भी बातचीत की और डीएमएसआरडीई परिसर में एक अशोक का पौधा भी लगाया।



वाइस एडमिरल संजय वात्सयन, 16 अप्रैल 2024 को ईसा, दिल्ली में

ईसा, दिल्ली

- रियर एडमिरल कुणाल सिंह राजकुमार, VSM, फ्लैग ऑफिसर (सिद्धांत एवं धारणाएँ), भारतीय नौसेना, ने 19 मार्च 2024 को पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा), दिल्ली, की परियोजना गतिविधियों से परिचित होने के लिए ईसा का दौरा किया। ईसा ने उन्हें अपनी परियोजनाओं और गतिविधियों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान किया। इसके बाद युद्धाभ्यास और सिमुलेशन के क्षेत्र में ईसा द्वारा विकसित उत्पादों के प्रदर्शन और भविष्य की नौसेना परियोजनाओं के लिए आगे के रास्ते पर चर्चा की गई।
- वाइस एडमिरल संजय वात्सयन, AVSM, NM, ने 16 अप्रैल 2024 को पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (ईसा) का दौरा किया ताकि ईसा की गतिविधियों से परिचित हों। उन्हें ईसा के सिस्टम विश्लेषण अध्ययन और परियोजना से संबंधित गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई।



रियर एडमिरल कुणाल सिंह राजकुमार, ईसा, दिल्ली में अपने दौरे के दौरान

एमटीआरडीसी, बेंगलुरु

16 TETRA स्कूल, वायु सेना, जलाहल्ली ईस्ट के वायु सेना कर्मियों के लिए सूक्ष्मतरंग नलिका अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (एमटीआरडीसी), बेंगलुरु, की विभिन्न सुविधाओं का औद्योगिक दौरा और प्रदर्शन आयोजित किया गया। तीन निर्देशन कर्मचारियों के साथ 29 वायुसैनिक प्रशिक्षुओं ने केंद्र का दौरा किया।



एमटीआरडीसी, बेंगलुरु में औद्योगिक दौरा और प्रदर्शन



बिक्री के लिए उपलब्ध नवीनतम मोनोग्राफ

इनोवेटिव प्रैक्टिसेज इन प्रोडक्ट डवलपमेंट थ्रु दी आईज ऑफ ए प्रोडक्ट डेवलपर

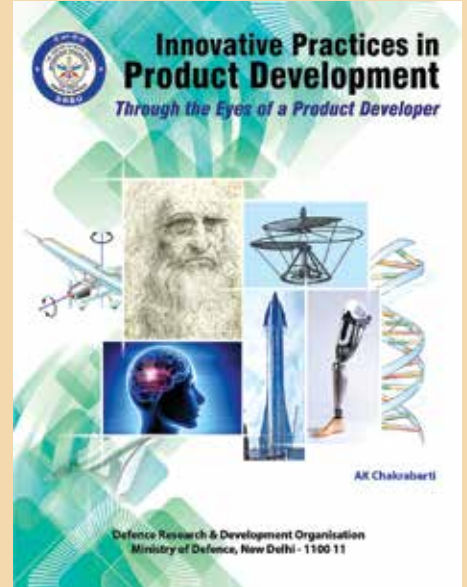
ए के चक्रवर्ती

इस पुस्तक का लक्ष्य डवलपर्स को आधुनिक कार्यप्रणालियों और तकनीकों को संकलित करते हुए ऐतिहासिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों पर ज्ञानवान बनाना है। यह प्रक्रिया के चरणों को एक क्रम में विस्तृत करती है, जिसे डिजाइन-कॉन्फिगर-कनेक्ट-डिजाइन (DCCD) नाम दिया गया है। पुस्तक में अनिश्चितता विश्लेषण, जोखिम मूल्यांकन और शमन, विफलता विश्लेषण और पूर्वानुमान जैसे कुछ आवश्यक पहलुओं को शामिल किया गया है। आधुनिक गुणवत्ता उपकरणों का एक सेट भी प्रस्तुत किया गया है।

लेखक के बारे में: श्री अमल कुमार चक्रवर्ती ने उच्च-स्तरीय अंतरिक्ष उत्पादों और प्रणालियों को आगे बढ़ाने के लिए चालीस वर्ष समर्पित किए हैं। उन्होंने रॉकेट प्रणोदन, नियंत्रण सक्रियण प्रणाली और एयरोस्पेस मिशनों के लिए परियोजना प्रबंधन में विशेषज्ञता हासिल की। उन्होंने जटिल प्रणालियों में संपर्क क्षमता को बढ़ाते हुए, बर्ड्स नेस्ट डायग्राम का बीड़ा उठाया। वर्तमान में, वह मूल्य-आधारित उत्पाद विकास और इंजीनियरिंग डिजाइन और प्रौद्योगिकी उन्नति के दार्शनिक आयामों पर शोध में लगे हुए हैं।

ISBN: 978-93-94166-47-9

मूल्य: ₹2500/ US \$50 UK £40



टेस्ट रेंज: इवोल्यूशन एंड रोल इन वेपन डवलपमेंट

पी के महापात्रा

यह मोनोग्राफ रेंज कार्यप्रणाली को समझने के लिए आवश्यक विवरण के साथ हथियारों का परिचय देता है। इसमें हथियारों के प्रकार, जटिलताएं, पेलोड वितरण, प्रणोदन प्रणालियां, लक्ष्य निष्क्रियकरण, सुरक्षा, विश्वसनीयता, जीवन चक्र, चरम जलवायु में प्रदर्शन और उच्च गति के प्रभाव शामिल हैं। पुस्तक एक आदर्श रेंज की विशेषताओं की खोज करती है और हथियार के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक तरीकों पर चर्चा करती है।

यह मोनोग्राफ वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और हथियार डिजाइन, विकास, उत्पादन, गुणवत्ता आश्वासन और रेंज संचालन में लगे पेशेवरों के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य करता है। यह राष्ट्रीय रक्षा में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए समान रूप से जानकारीपूर्ण है क्योंकि यह हथियारों और रेंजों के महत्वपूर्ण पहलुओं में व्यापक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। राष्ट्र की सुरक्षा में एक-दूसरे के परस्पर संबंध को उजागर करता है।

लेखक के बारे में: श्री पी के महापात्रा एक बहुमुखी प्रतिभा हैं जिन्होंने कंप्यूटर, हथियारों के परीक्षण, मापन उपकरणों, सामग्री प्रबंधन, प्रशासन और मानव संसाधन विकास जैसे क्षेत्रों में काम किया है। उन्होंने 1971-72 में ISI, कोलकाता से "प्रोग्रामिंग और इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर के अनुप्रयोग" में 3 महीने का कोर्स किया। उन्होंने 1982 में PXE में कंप्यूटर युग की शुरुआत की। उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों में प्रोपेलेंट प्रूफ रिपोर्टों को संकलित करना शामिल है, जो सभी तालिकाओं के संदर्भ को दरकिनार कर देता है। एक और उपलब्धि है, रेंज में कोण माप को रेखीय समीकरणों में रूपांतरित करना ताकि प्रक्षेप्य के प्रभाव बिंदु के स्थानिक निर्देशांक निर्धारित किए जा सकें। उन्होंने वित्त, सामग्री प्रबंधन और गोला बारूद प्रबंधन से जुड़े कई सॉफ्टवेयर भी बनाए हैं।

ISBN: 978-93-94166-02-8

मूल्य: ₹2900/ US \$53 UK £44

